ईश्वर की कहानियाँ

विष्णु नागर

एक दिन ईश्वर एक मज़दूर के यहाँ अचानक पहुँचे। उन्हें अतिथि जानकर उसने उनकी खूब आवभगत की।

ईश्वर उस पर बहुत मेहरबान हुए। वे चुपचाप दरी के नीचे सोने के कुछ सिक्के छोड़ आए।

बाद में मज़दूर की पत्नी ने दरी समेटी तो सिक्के निकले। उसने अपने पति को बताया। मज़दूर ईश्वर को ढूँढने निकला। जहाँ-जहाँ उनके होने की सम्भावना हो सकती थी, वहाँ-वहाँ गया। वह क्या जानता था कि ये ईश्वर थे।

थक-हारकर वह सोने के सिक्के थाने में जमा कर आया और बदले में पुलिस की मार खा आया।

ईश्वर को जब मज़दूर की इस मूर्खता का पता चला, तो वह खूब क्रोधित हुए।

उन्होंने अगले ही दिन उसकी छँटनी का नोटिस भिजवा दिया।

विष्णु नागर: बचपन और छात्र जीवन शाजापुर, मध्य प्रदेश में बीता। सन् 1971 से दिल्ली में स्वतंत्र पत्रकारिता। *नवभारत टाइम्स* तथा *दैनिक हिंदुस्तान, कादंबिनी, नई दुनिया* और *शुक्रवार समाचार* साप्ताहिक से जुड़े रहे। भारतीय प्रेस परिषद के पूर्व सदस्य एवं महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा की कार्यकारिणी के पूर्व सदस्य। वर्तमान में स्वतंत्र लेखन।

चित्र: कैरन हैडॉक: शोधकर्ता, शिक्षिका, वैज्ञानिक, अध्यापिका और चित्रकार। उन्होंने अमेरिका में बायोफिज़िक्स में अपनी पीएच.डी. और पोस्टडॉक्टरल अध्ययन पूरा करने के बाद भारत में काम शुरू किया। अपने सभी प्रयासों में, उनका प्रमुख सरोकार समाज के वंचित वर्गों के प्रति रहा है, और वे सामाजिक परिवर्तन के लिए कला और विज्ञान शिक्षा - दोनों का उपयोग करती रही हैं।

यह कहानी हरियाणा राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा तैयार की गई विष्णु नागर की किताब *ईश्वर की कहानियाँ* से साभार।